साहित्य में नारी चित्रण की परम्परा

*प्रा. श्रीमती. कावळे रेविता बलभीम

समाज में ही -ही तो साहित्य में भी, यथार्थ में ही -ही तो ज्ल्प-ाा में भी -ारी ज ा सहयोज पुरूष जे लिए सुजद अ-ुभूतियों ज ा महासाजर है | -ारी जे बी-ाा दु-िया अधुरी है | इसी ज ारज -ारी साहित्य ज ा भी मुज्य विषय रही है | जिसी भी साहित्यिज विधा में -ारी प्रमुज रूप से साम-े आती है | जिसी भी विधा ज ो समझ-े जे लिए -ारी चरित्र ज ा सहारा लिया जाता है | अजर साहित्य से या साहित्य जी जिसी भी विधा से -ारी ज ो ि-जाल दिया जाए तो साहित्य या साहित्यज ार अप-ी सरसता और मधुरता ज ो जो बैठेजा | जिसी भी साहित्य ज ा -ारी चित्रज उस देश जी -ारी - स्थिति ज ा परिचायज होता है | अत: साहित्य जे समुचित अध्य-ा जे लिए उस देश जी सामाजिज, आर्थिज एंव राज-ीतिज परिस्थितीयों ज ा पता भी लजाया जाता है | साहित्यिज ज ालों में हो-ेवाले -ारी चित्रज जे साथ हमारा ध्या-ा तत्ज ाली-ा परिस्थितीयों जी ओर जाता है | इसी ज ारज जिसी भी साहित्यिज विधा में -ारी चित्रज ज ो बहुत महत्त्व है |

-ारी जी परिभाषा एंव स्वरूप :-प्राजी जजत में '-ारी' शब्द '-र' जे समा-तर है | इसज ा प्रयोज स्त्रीलिंजवाची 'मादा' प्राजियों जे प्रतीज रूप में होता है | जि-तु मा-व समाज में '-ारी'शब्द इस सामा-य अर्थ में जृहीत -ही है | जि-तु उसज ा स्था-ा -र से ज्हीं बढ़ज र है | ज ोमलता, सुंदरता, दृढ़ता आदि ज्ई जुज -र जी अपेजा -ारी में विशेष पाये जाते है | पार्वती, जंजा ,सीता, सावित्री, राधा, महाराजी लज्मीबाई आदि -ारियाँ इ-ही आदर्शो जी प्रमाज है | 'भारतीय साहित्य' में -ारी जे लिए अ-ेज -ाम प्रचलित है | -र-धर्म से संबंध हो-े जे -ाते उसे '-ारी'ज्हा है | 'ऋज्वेद'में -ारी ज ो'मे-ाा 'ज्हा जया है, क्योंजि उसे पुरूष सम्मा-ा देते है | इसमें लज्जा भाव विशेष हो-े जे ज ारज उसे 'स्त्री' ज्हा जया है | वह पुरूष जे प्रति स्वयं ज ो समर्पित ज रती है, तो 'अधिज ारीजी' ज्हलायी जाती है | वह पुरूष पुलजित और हर्ष ज र-े में समर्थ हो-े जे ज ारज 'प्रमदा' ज्हलाती है | 'स्त्री' जे इस भिन्न -भिन्न -ाम रूपों जे आधार पर उसजे स्वरूप जी परिज्ल्प-ाा जी जा सज्ती है | वह प्रहर्षज ारीजी मा-ावी, जिसमें लज्जा , रजात्मज, चेत-ाा, ज म-ीयता एंव मा-ाव व्यवहार जी दजता है | वह 'पुर्ज -ारी' ज्हला-े जी अधिज ारीजी है |

भारतीय जीव-ा पध्दती में -ारी ज ा स्था-ा :- भारतीय जीव-ा पध्दती जी समज्र जरीमा, अर्थवत्ता जी आधार, परिवार जी परिज्ल्प-ाा, उसजी सार्थज्ता -ारी जे बी-ाा संदिज्ध है | ज-ा-ी और जीव-ा संजी-ी जे रूप में वह परिवार जी संचालिज ा है | भारतीय विधा-ा संहिता जे ि-यामजों में प्रसिध्द महर्षी म-ु-े घोषजा जी थी जी, जहाँ -ारियों जी पुजा होती है वहाँ देवता रमज ज रते है | वैदिज वाङमय में ज्हा जया है जी 'स्त्री' ही घर है | एतरेय ब्राम्हज में -ारी ज ो सजा जे पद पर प्रतिष्ठीत ज रजे उसजी महिमा पुरूष जे समज्ज स्वीज ार जी है | उप-िषदें में उससे भी एज पज आजे बढ़ज र सृष्टि जी संपूर्ज रिक्तता जी पुर्ति स्त्री से मा-ी जई है | मा-ाव जाति जी जरिमा जे विधायज तत्व विदया, वैभव, तेज और परिज्र मा आदि ज ो भारतीय मर्-िषियों -े विभिन्न देवियों जे रूप में अर्थात -ारी -ाम से अभिहित जिया है | भारतीय मर्-िषियों जी दृष्टि में जीव-ा ज ा ज ोई भी पुज्य ज र्म -ारी जे बी-ाा सार्थज -ही मा-ाा जया | इसलिए श्रीराम ज ा अश्वमेघ यज्ञ जे अवसर पर सीता जी अ-ुपस्थिती में उसजी स्वर्ज मुर्ति ज ो सहभाजि-ी ब-ाा-ाा पडा | अर्थात साहित्य ज ो जीव-ा ज ा दर्प-ा ज्हा जया है -ारी उसज ा अभिन्न अंज है|

हिंदी पुर्व साहित्य में -ारी - चित्रज :- भारतीय साहित्य धारा ज ा उद्जम वेदो से सर्वमा-य है | इसजे पश्चात ज्रंथो एंव उप-िषधों से होती हुई यह धारा रामायज और महाभारत तज आज र पर्याप्त जहज एंव समृध्द हो जाती है | साहित्यीज परम्परा अतिदीर्घ एवं समृध्द है| -ारी चित्रज भी उसी ज-ाजीव-ा जे चित्रज में समाहित है | भारतीय वाङमय में -ारी जे अ-ेज रूपों ज ा चित्रज हुआ है देवी, माता, पत्-ी , ज-या , आदि | -ारी जी उदात्तता जी दृष्टि से यह ज्र म उसजे ज-या रूप से प्रारम्भ होज र देवी रूप तज चरम उत्ज र्ष ज ो प्राप्त होता दिजाई देता है |

देवी रूपा -ारी :- वैदिज साहित्य में -ारी ज ा अधिज ांशत: देवी रूप मे चित्रज हुआ है | वेदो में अदिति, उषा, इंद्रायजी, इला, दिप्ती, सीता, सरस्वती अदि देविंयो ज ा स्तव-ा हुआ है | पुरा-ायुज तज आते आते देवी रूपा -ारी जी लौजिज विभुति ज ा संहार मुज्यत: सरस्वती, दुर्जा और लज्मी इ-ा ती-ों रूपों में हुआ है | भारतीय समाजव्यवस्था जे अंतर्जत प्रचलित वर्ज व्यवस्था ज ा उ-ा ती-ा देवी रूपों से अलौजिज संबंध जुड़ा है | इसिलिए ये ज-ाजीव-ा ज ा -ैसर्जीज अंज ब-ा जए | ब्राम्हज वर्ज जे लिए सरस्वती, जत्रिय जे लिए दुर्जा और वैश्य जे लिए लज्मी जी आराध-ाा उ-ाजे जीव-ा ज र्मो ज ा मुल आधार ब-ा जयी | पुराजज ाल में युक्त ती-ों देवी रूपों जे अतिरिक्त शिवपत्-ी पार्वती जे -ाम से एज अ-य देवीरूप जी भी प्रतिष्ठा हुई | उसे एज आदर्श पत्-ी और सती -ारी जे रूप में विशेष ज्याति मिली | वैदिज, पौरा-िज , संस्ज़ृत ज ाव्यों में उल्लेजर्-ीय ऋषी--ारियों, जुरू पत्-ियों एवं अ-य सुपुज्य -ारियों जे -ाम भी देवीतुल्य जृहीत है | जैसे लोपामुद्रा, अ-ुसूया, अरुंधती, मातंजी आदि | अर्थात देवीरूपा -ारी ज ा चित्रज साहित्य और भारतीय जीव-ा में उसजी अ-ा-य प्रतिष्ठा ज ा द्योतज है |

मातृरूपा -ारी :- भारतीय साहित्य में -ारी जी उदात्तता ज ा चरम दर्श-ा उसजे मातृरूप मे होता है | मातापिता जे समास मे माता शब्द ज ा

* हु.बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, वसमतनगर, हिंगोली

स्था-ा ही प्रथम है | ऋज्वेद में अदिति जा ओजस्वी-ी माता जे रूप में चित्रज हुआ है | जे-ोपर्ा-िषद में ब्रम्ह जा -ारी रूप में वर्ज-ा उसजी मातृशक्ति जे माध्यम से जिया है | अथर्व वेद में पुत्र जो यह उपदेश दिया जया है जी वह माता से प्रीतीयुक्त मा-ा-ेवाला ब-े | तैतिरिय ब्राम्हज में माँ जी देवता जी भाँती पुजा जर-े जा आदेश है | शतपत ब्राम्हज में माता जो सबसे पहला जुरू मा-ा है | भारतीय ज-ाजीव-ा में मातृरूपा -ारी जी सर्वोच्च प्रतिष्ठा है | माता जो स्वर्ज से श्रेष्ठ ब-ा-ेवाली युक्ती 'ज-ा-ी ज-मभुमिच्छ स्वर्जादपि जरीयसी' -िसंदेह मातृरूपा -ारी जे प्रती भारतीय म-िषियों जी अपार श्रध्दा जा प्रतिज है | पवित्र -दियों जो भी ज-ासाधारज जंजामैया, यमु-ा मैया , सरस्वती मैया आदि मातृसंबोध-ोंसे अभिहित जरता है | इस मा-यता जा आदिस्त्रोत भी वैदिज वाङमय है | इस प्राची-ा साहित्य में मातृरूपा -ारी जा चित्रज उसजी महती जरिमा जा सुचज है |

पत्-ीरूपा -ारी :-वैदिज साहित्य में पत्-ी जो पती जे घर में सर्वोपरी स्था-ा दिया जया है | इसजा प्रमाज है ऋज्वेद जा यह जथ-ा 'पत्-ी ही घर है'| अथर्व वेद में पत्-ी जो रथ जी धुरी जे समा-ा जृहस्थ जा मुलआधार जहा जया है | इस संबंध में अथर्व वेद जी यह उक्ति उल्लेज-ीय है | हे पत्-ी तु दृढरूप से स्थिर रहे, तु विराट है | हे सरस्वती! तू इस पतीजृह में विष्जू जी तरह है | पत्-ी सारे घर जी -ियमिजा और व्यवस्थापिजा है | जिस प्रजार समुद्र वर्षा जरजे -दियों पर साम्राज्य प्राप्त जरता है | उसी प्रजार पत्-ी जे घर आजर वहाँ जी समृध्दि ब-ती है | म-ुस्मृती में जहा है पितरों जा और हमारा स्वर्ज सब पत्-ी जे अधी-ा है | म-ु जे जथ-ा-ुसार पत्-ी पुज्या है | अत: जुल जे हितभिलाषी पिता, भ्राता, पती एवं परिवार जे अ-य सदस्यों जो सदा जृहि-ियों जा आदर जर-ा चाहिए | जीव-ा जे विविध जेत्रो में पत्-ी जे पतीतुल्य अधिजारों जी चर्चा जरते हुए वेदो में जहा जया है जी पती अप-ी सौभाज्य जी वृध्दी जे लिए पत्-ी जा पा-ीग्रहज जरता है | उसजा जर्तव्य है जी वह प्रत्येज जार्य में पत्-ी से परामर्थ जरे, पत्-ी जे म-ा जी भाव-ाओं जो भलीभाँती समझजर तद्अ-ुजुल व्यवहार जरे | पत्-ी रूपा -ारी जी यह प्रतिष्ठा रामायज, महाभारत एवं परवर्ती साहित्य में स्थापीत रही है |

ज-या रूपा -ारी :- साहित्य में -ारी जे ज-यारूप जा चित्रज अपेजाजृत जम मात्रा में हुआ है | वैदिज साहित्य में प्रत्येज जृहस्थ व्दारा ज-या जी जाम-ा और उसजी समुचित पाल-ा जी जा-े जा विधा-ा है | ज-या प्राप्ती जे लिए देवताओं जी पुजा, म-ौती जी जा-े जा उल्लेज वेदो में मिलता है | वैदिज युज मे पुत्र और पुत्री में जोई भेद -ही मा-ा जया | पुरा-ाजाल में ज-या जी प्रतिष्ठा अधिज दिजाई देती है | इसजा परंपरा विहित प्रमाज आज भी आस्तीज समाज में 'ज-यापुज-ा' जी प्रथा में प्राप्त है | रामायज जा जथ-ा है जी ज-या जी प्राप्ती बड़ी तपस्या से होती है | अर्थात भारतीय समाज और साहित्य में ज-यारूपा -ारी जा स्था-ा प्रतिष्ठा जा था | भारतीय समाज और परिवार में ज-या जा विवाह , दहेज, वैधव्य एंव आर्थिज स्वातंत्र्यसबंधी विविध सामाजीज रूढीयों जा परिजाम मा-ा जाता है | जतिपय पाश्चात्य विद्वा-ा ज-यावध जी जुप्रथा जा सबंध वेदों से जोड़-े जा प्रयास जरते है | ऋज्वेद में ज-या जो विवाह जे सब प्रजार से योज्य ब-ा-े जा स्पष्ट उल्लेज मीलता है | इस प्रजार भारतीय जीव-ा पध्दती में ज-या रूपा -ारी जा महत्व प्रस्तुत जिया है |

आदि एवं मध्यमजाली-ा साहित्य में -ारी :- आदिजाली-ा -ारी चित्रज जा उज्वल पज प्रमुजत: दो रूपों में चित्रित है, प्रथम विरांज-ा रूप में तथा व्दितीय आदर्श सती रूप में | वीर जाव्यों मे चित्रित उत्साही , बलिदा-ी एंव प्रबल पराक्रमी योध्दाओं जी प्रेरजादायि-ी शक्ति जे रूप में माता, पत्-ी अथवा भजि-ी रूपा -ारी जा चित्रज मिलता है | रासो ग्र-थों एंव आल्हाजज्ड आदि वीर जीति जव्यों जे अतिरिक्त सुर्यमल्ल और बांजीदास जृत मुक्तज वीर जाव्यों में इस प्रजार जी वीरांजजा -ारियों जे अ-ेज चित्र प्राप्त है | मध्ययुजी-ा भक्ती जाव्य जे अंतर्जत संत जवियों व्दारा चित्रित -ारी ही-ा और जृहीत रूप में उपस्थित हुई है | उ-जे लिए -ारी भक्ती , मुक्ती और आत्मज्ञा-ा दूर जर-ेवालीही रही | उसे साध-ा मार्ज में बाधज समझा है | मुक्ती जे उच्चतम लज्य तज पहुँच-े में -ारी रूपि-ी आज-ी जी ज्वाला जो पार जर-ा उ-जे लिए सदैव चिंत-िय रहा | अप-े -िराजार सच्चिदा-ा-द आराध्य जो उ-हो-े अ-ेज स्था-ो पर माता रूप में परिजल्पित जिया है | भक्तिजाली-ा प्रेममार्जी जवियों जी प्रवृत्ती -ारी जे प्रेमिजा और पत्-ीरूप जा चित्रज जरती है तथा उ-ा रूपों जा चित्रज उदात्तता लिए हुए है | पद्मावती, मधुमालती, हंसावती, इंद्रावती आदि आदर्श प्रेमिजाएँ है | यही -ारीयाँ परिवारिज परिप्रेज्य में आदर्श पत्-ियाँ सिध्द होती है |उत्तरमध्यजाल में -ारी चित्रज जा जेत्र प्रमदा रूप तज सिमित है| -ायिजा रूपिजी -ारी जे रूप में सौ-दर्य अभिव्यक्ती है|

-िष्जर्ष :- साहित्य में -ारी चित्रज जे विविध रूपों जा, -ारी चित्रज जी परम्परा जा विवेच-ा जिया है | परिस्थितीयो जे अ-ुसार -ारी जी स्थिती परिवर्तीत रही है | हिंदी पुर्व साहित्य में प्राप्त -ारी चित्रज ज-यारूप जो छोड़जर अ-य सभी रूपों में उदात्तता युक्त है | शिजा, समाज, शास-ा, परिवार एवं धर्म आदि जेत्रो में उसजी स्थिती स-मा-ि-ीय रही है | आदि तथा मध्यजाली-ा चित्रित -ारी जे विविध रूप उसजे जीव-ा जे उत्जृष्ठ और -िजृष्ठ दो-ों छोर जी ओर -िर्देश जरते है | राज-ीतिज वातावरज में परिवर्त-ा जे साथ -ारी जाजरज आरम्भ हुआ | शिजा प्रचार से -ारी जीव-ा जे ब-ध-ा टुट जये | इस प्रजार देश जी बदलती परिस्थितीयों जे साथ -ारी जीव-ा में बहुमुजी प्रजति तथा जाजृती आती जई है| साहित्य में भारतीय साहित्य जे पुरात-ा युज से लेजर वर्तमा-ा आ-तर्राष्ट्रिय जेत्र तज जार्य जर-ेवाली -ारियों जा चित्रज साहित्य में मिलता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ

१) उप-यासजार चतुरसे-ा शास्त्री जे -ारी पात्र - डॉ. सूतदेव हंस. २) एज -ही दो -दो मात्राऐं -र से बढजर -ारी - जुप्त. ३) संस्जृत हिंदी जोश - वाम-ा आप्टे. ४) हिंदी जोश - वाम-ा आप्टे. ५) जामाय-ी - लज्जा सर्ज. ६) प्राची-ा साहित्य में -ारी - डॉ. जजा-ा-ा शर्मा. ७) वैदिज साहित्य में -ारी - डॉ. प्रशांत जुमार.